भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 769

गुरुवार, 8 फरवरी, 2024 को उत्तर देने के लिए

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करना

769. श्री कार्तिकेय शर्माः

क्या **प्रधानमंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) आगामी तीन वर्षों में गहन अंतरिक्ष अन्वेषण (डीप स्पेस प्रोब) की तैयारी कर रहा है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) विगत पांच वर्षों में भारत की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के संबंध में मेक इन इंडिया अभियान के योगदान का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री
(डॉ. जितेन्द्र सिंह) :

(क) जी हां, भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं:

1. भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 भारत सरकार द्वारा जारी की गई है, जिसमें समग्र भारतीय अंतरिक्ष परितंत्र में योगदान करने वाले सभी हितधारकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को परिभाषित किया गया है।
2. इन-स्पेस द्वारा निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने और ठोस सहायता प्रदान करने के लिए बीज निधि योजना, मूल्य निर्धारण सहायता नीति, मेंटरशिप सहायता, गैर सरकारी कंपनियों के लिए डिजाइन प्रयोगशाला, अंतरिक्ष क्षेत्र में कौशल विकास, इसरो सुविधा उपयोग सहायता, गैर सरकारी कंपनियों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा संभावित व्यापारिक अवसरों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय उद्योगों के साथ लगातार बैठक/ गोलमेज वार्ता जैसी विभिन्न योजनाओं की भी घोषणा की गई और इन्हें लागू किया गया।

...2/-

3. इन-स्पेस ने अंतरिक्ष में ऐसी गैर सरकारी कंपनियों द्वारा परिकल्पित अंतरिक्ष प्रणालियों और अनुप्रयोगों के निर्माण के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने हेतु गैर-सरकारी कंपनियों (एनजीई) के साथ लगभग 51 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे प्रक्षेपण वाहनों और उपग्रहों के निर्माण में उद्योग की भागीदारी बढ़ने की आशा है।

4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत स्टार्ट-अप्स की कुल संख्या लगभग 189 है।

(ख) इस समय, इसरो के पास गहन अंतरिक्ष अन्वेषण की कोई योजना नहीं है। हालांकि, समानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम को जारी रखना, चंद्रमा और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन और अनुवर्ती मिशनों जैसे उन्नत अंतरिक्ष अन्वेषण मिशनों के लिए संकल्पना अध्ययन चल रहे हैं।

ग) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में "मेक इन इंडिया" पहल अंतरिक्ष क्षेत्र में घरेलू विनिर्माण, नवाचार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम दोनों क्षेत्रों की पूर्ति करती है।

घरेलू उद्योगों के पर्याप्त योगदान के साथ भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम ने पिछले 5 वर्षों में अनेक नई ऊंचाइयों का स्पर्श किया है, जो अंतरिक्ष गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में स्वदेशी क्षमताओं को दर्शाता है। प्रमुख उपलब्धियों में एलवीएम3 और पीएसएलवी का वाणिज्यिक प्रमोचन, एसएसएलवी का विकास, भू-प्रेक्षण उपग्रह, नौवहन उपग्रह, चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग और रोविंग, सूर्य का अध्ययन मिशन (आदित्य-एल1) और समानव अंतरिक्ष उड़ान के प्रदर्शन की दिशा में प्रमुख प्रगति शामिल हैं।

मेक इन इंडिया पहल और परिणाम की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. अंतरिक्ष हार्डवेयर का घरेलू विनिर्माण: इसरो और इन-स्पेस के माध्यम से क्रमशः महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियां और औद्योगिक परितंत्र विकसित किए जा रहे हैं।
2. भारतीय गैर सरकारी कंपनियों द्वारा अंतरिक्ष प्रणाली और उपग्रह विनिर्माण सुविधाएं स्थापित की जा रही हैं।
3. गैर सरकारी कंपनियों द्वारा प्रमोचक रॉकेट प्रणाली निर्माण सुविधाएं स्थापित की जा रही हैं।

***